आन्ध्रा की परम्परागत लोक–कला के प्रतिनिधिः कोण्डा पल्ली काष्ठ खिलौने

प्राप्तिः 25.10.2024
स्वीकृतः 22.12.2024

89

पूनम बघेल
शोधार्थी (ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग)
कला संकाय
दयालबाग एजुकेशन इंस्टीट्यूट, आगरा
ईमेलः priyabely@gmail.com

डॉ. नमिता त्यागी
असिस्टेंट प्रोफेसर (ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग)
कला संकाय
दयालबाग एजुकेशन इंस्टीट्यूट, आगरा
ईमेलः natyagi09@gmail.com

सारांश

भारतीय कला की सामग्री वैसे ही समृद्ध है जैसे भारतीय संस्कृति में साहित्य,धर्म और दर्शन भारतीय कला के वातायन द्वारा हम यहाँ के मूर्तियाँ, चित्र, वास्तुशिल्प आदि का दर्शन प्राप्त कर सकते है और इनके पीछे छिपी मानसिक कल्पना से परिचत हो सकते हैं। भारतीय कला में भारतवर्ष के विचार,धर्म व तत्वज्ञान और संस्कृति के दर्शन होते है। अतः कला में जनजीवन व लोक कला का प्रतिबिम्ब पाया जाता है। भारतीय कला हमें चित्र, मूर्ति, स्थापतिय, शिल्प आदि अनेक रूपों में देखने को मिलती है। भारतीय शिल्प कला के अन्तर्गत हमे खिलौनो के विपुल संसार से परिचित होते है। खिलौनों का इतिहास अति प्राचीन है। सिन्धु सभ्यता से लगभग 2500 ई. पू. प्राचीन खिलौने मिले हैं। शुंग, कुषाण, गुप्त व सातवाहन के खिलौने व मृणमूर्तियों के साक्ष्यों से खिलौने की परम्परा द्वारा स्वतः ही दृष्टिगोचर होती है। ऐसी ही कला परम्परा के अन्तर्गत कोण्डापल्ली खिलौनों की समृद्ध निध ी आज भी प्रचलित है।

प्रस्तावना "शिल्प विद्या सदा श्रेष्ठा सर्वानददायिका" 'महर्षि कणाद'

शिल्प शास्त्रीय अध्ययन सदा श्रेष्ठ है तथा आनंद दायक है। शिल्प अति प्राचीन और व्यापक शब्द है। विभिन्न युगों में शिल्प का प्रयोग अर्थद्रोण अनेक नामों से होता रहा है। शिल्प शब्द को संस्कृत प्राचीन ग्रन्थों में कला–कौशल के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है।

कला एक परिवर्तनीय विषय है। कला का रूप हमेशा बदलता रहता है। भारतीय सन्दर्भ में सिन्धु सभ्यता से अनेकानेक माध्यमों में कला परिलक्षित होती है। यहाँ अनेकों कलात्मक व महत्वपूर्ण सामग्री अवशेष रूप में प्राप्त हैं, जिनमें मूर्तिशिल्प, मोहरें, आभूषण, मृतभाण्ड तथा नगरीय सभ्यता आदि इसके प्रमाण हैं, इन सभी अवशेषों के साथ–साथ मूर्तन के रूप में कुछ ऐसे आकार भी प्राप्त हैं, जो खिलौनों के रूप में पहचाने जाते हैं।

सैंधव कालीन खिलौने अधिकांशतः मिट्टी, लकड़ी, हाथीदांत, धातु आदि विभिन्न माध्यमों में बने हैं। सिन्धु सभ्यता से लेकर आज अवधि तक भारतीय सभ्यता में खिलौनों का प्रचलन रहा है। बनमाली से हल की आकृति का खिलौना, बैलगाड़ी, लोथल से घोड़ा, कुत्ता, मेढ़ा और बैल के सिर वाली आकृतियाँ व गोटियाँ मिली हैं तथा पक्की मिट्टी की नाव, झोब से साड़ों की आकृतियाँ, पिरयानो घुड़ाई से घोड़े का अग्रभाग, पक्षी के आकार की सीटी, छोटी चढ़ाई वाला बन्दर व पासे जैसे अनेक (नमूने) आदि अनेकों आकृतियाँ खिलौने के रूप में देखी जा सकती हैं। सिन्धु सभ्यता के अनेक महत्वपूर्ण स्थलों की खुदाइयों से बहुत अधिक संख्या में खिलौने और ऐसी वस्तुएँ प्राप्त हुई है, जिनका प्रयोग खेलों में किया जाता था।

साहित्य में खिलौने के संदर्भ

भारत में खिलौनों का इतिहास अति प्राचीन एवं समृद्धशाली रहा है। खिलौनों की प्राचीन परम्परा साहित्य से स्वमेव प्रकट हो जाती है। 'ऋग्वेद' व 'अथर्ववेद' में 'अक्ष' शब्द का प्रयोग कई बार हुआ है, जिसका अर्थ 'पासा' या 'गोटी' है। पासा विभीतक फल का बना होता था। इसी प्रकार महाभारत कालीन इतिहास से ज्ञात होता है कि बाल्यकाल में पांडव 'वीटा' से खेलते थे। वीटा शब्द का अर्थ गिल्ली जो कि आकृति की करीब चार अंगुल की लकड़ी है। सम्भवतः इस लकड़ी को दूसरी बड़ी लकड़ी से दूर फेंका जाता था। जैन साहित्य में गिल्ली को 'अडोलिया' कहा गया है। इनमें बच्चों के लिए अनेक खेल खिलौनों का उल्लेख आता है। जैसे–खुल्लय (कौड़ी), वट्टय (वर्तक–लाख की गोली), कन्दूक (गेंद), पोत्तुल्ल (गुड़िया), शरपात (धनुष), गोरहल (बैल), डिंडिम और चेलगोल (कपड़े की गेंद) आदि हाथी, घोड़ा, बैल, रथ के खिलौनों से भी बच्चे खेला करते थे। अश्वलायन गृह परिशिष्ट, महाभारत, कश्यप संहिता, दिव्यावर्धानम, अभिज्ञान शाकुन्तलम, रघुवंशम, अष्टाध्यायी शूद्रककृत–मच्छकटिकम, नारद संहिता एवं वृहद कला कोश में खिलौनों तथा लघुमूर्तियों का विस्तार पूर्वक विवरण प्राप्त होता है।

पुरातात्विक साक्ष्य

पुरातात्विक उत्खननों से भी शुंग तथा कुषाण कालीन अनेक छोटे–छोटे मिट्टी के खिलौने बने है, जिनमें से कई रंगीन तथा बजने वाले भी है। जर्मन के पुरातत्वेत्ता हरर्बट–हर्टल को एक सुन्दर घरोंदा का नमूना मथुरा के पास सौंख नामक स्थान से मिला है। ऐसा ही एक अन्य साक्ष्य कन्नौज के पुरातत्व प्रेमी श्री सरदार मिश्र के संग्रह में एक सुन्दर 'नृत्यरत मयूर' बनाने का सांचा है। जो कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। पहली व दूसरी शती ई. पू. भरहुत व साँची के स्तूपों में लकड़ी व काष्ठशिल्पों का प्रयोग हुआ इस समय मिश्रित शैली में बनी ये विभिन्न कलाकृतियाँ जैसे सपक्ष हाथी, मकर, सिंह आदि के साक्ष्य मिलते हैं। शुंग काल में साँचे से खिलौने बनाने के लिए सर्वप्रथम साँचे में ढालकर ठोस सिर बनाने की प्रक्रिया शुरू होती थी,बाद में पूरे शरीर को कोरकर (हाथ से बनाकर) पूरे शरीर के साथ जोड़ा जाता था। बाद में पूरा खिलौनों ढालकर बनाया जाने लगा। जो खिलौने पट्टिकाओं पर उत्कीर्ण प्राप्त होते हैं, वे मिश्रित प्रक्रिया से बनते थे।

पटना, कुमराहर, बक्सर, मथुरा, कन्नौज, बीटा, कौशाम्बी और राजघाट। मध्य प्रदेश में ग्वालियर के नगर पवाया, बिहार में पाटलीपुत्र, लौरियानन्दगढ़, बक्सर, वसौली, बंगाल के ताम्रलिप्त महास्थान बानगढ़ और पहाड़पुर आदि अनेक स्थानों पर अति प्राचीन काल से मृणमूर्ति अथवा खिलौनों के प्रख्यात केन्द्र थे। उल्लेखनीय मृणमूर्ति व खिलौनों का संग्रह सारनाथ, भारत कला भवन वाराणसी, राज्य संग्रहालय लखनऊ, प्रयाग संग्रहालय इलाहाबाद, राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में देखे जा सकते हैं। शुंग काल में ''पश्चिमी घाट के पर्वतों में आन्ध्र कुल ने अनेक गुफाएँ बनवायी ''भाजा''(पूना), ''बेदसा''(पूना), ''पीथलखोरा''(खानदेश), ''कोडिण्य''(कोलावा) की गुफाएँ मुख्य हैं। यहाँ से प्राप्त मृणमूर्तियाँ चपटे डौल की हैं।

कुषाण काल के बाद भारतीय इतिहास अंधकार युग गहवर में तीसरी शती. के प्रथम चरण तक खोया रहा। अंधकार युग में कुछ वर्षों के लिए भार–शिव–नागों की सन्ता कायम रही। तदान्तर देदीप्यमान सुव्यवस्थित गुप्त काल प्रारम्भ हुआ। गुप्तकाल को स्वर्ण युग माना जाता है। इस युग की मूर्तियों में सौन्दर्य एवं चारू तत्व की प्रधानता है। इन मूर्तियों में मनोरंजन व खिलौनों के साक्ष्य स्पष्ट हैं। झरोखों से झांकते मुख, हंसा क्रीड़ा, शुक क्रीड़ा, अंकधात्री जो एक हाथ से कमर पर शिशु साध ो है व दूसरे हाथ में गेंद पकड़े हुए है, तत्कालीन समाज के आनंद पक्ष को प्रकट करती है।

गुप्तोन्तर काल के बाद कला का ह्रास हुआ। शिल्पियों का राजाश्रय क्षीण हुआ, तब कला सामान्य जन की कला बन गई। शिल्पकारों ने खिलौनों व उपयोगी वस्तुओं का अंकन कर अपने ध ैर्य का परिचय दिया।

राजपूतों ने राजकुमारों के खेलने हेतु खिलौनों के निर्माताओं को युद्ध, सैनिक व घुड़सवार जैसे खिलौने बनाने के लिए प्रेरित किया। मुगलकाल में रूप–कृतियाँ इस्लाम धर्म में निषेध होने के कारण खिलौना उद्योग का विकास अवरूद्ध हुआ, फिर भी बच्चों के खेलने के समान रूप खिलौनों का निर्माण जारी रहा। मुगलकाल में धार्मिक तथा राजनैतिक कारणों से शिल्पकार व कलाकारों ने वैभवशाली नगरों से पलायन कर लिया तथा देश के दक्षिण भू. भाग क्षेत्र मैसूर, आन्ध्र, तमिल और

विजयनगर के हिन्दू राजाओं के अधीन हो गये, जहाँ खिलौना उधोग विविध माध्यमों में भली–भाँति फला–फूला। मैसूर और विजयनगर में हाथीदांत और चन्दन की लकड़ी के खिलौने बड़ी मात्रा में बनाये जाते थे।

भारत में खिलौनों की परम्परा वास्तव में गोरवशाली रही है। इतिहासिक में उत्खननों से सभी काल खण्डों में इनकी प्रचुरता व प्रचंडता स्वतः ही दृष्टिगोचर होती है। दक्षिण भारत के आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल तथा पाण्डुचेरी क्षेत्रों में आज भी इस कला परम्परा को शिल्पकारों ने संजोये रखा है। इन परम्परागत खिलौनों में कोण्डापल्ली खिलौनों की अपनी एक विशिष्ट पहचान है।

कोण्डापल्ली खिलौने

आन्ध्र प्रदेश राज्य में विजयवाड़ा के पास लगभग 18–20 कि.मी. की दूरी कृष्णा जिले के अर्न्तगत कोण्डापल्ली नामक एक गाँव है। कोण्डापल्ली गाँव, कोण्डापल्ली कोटा/किले (चारों ओर सघन वन से घिरी पहाड़ी पर स्थित है) की तलहटी व राष्ट्रीय राजमार्ग उ0 221 के मध्य स्थित है। इस गाँव में लकड़ी के खिलौने व मूर्तिशिल्प बनते है। ये खिलौने जिस लकड़ी से बनते है वह कोण्डापल्ली क्षेत्र की स्थानीय पहाड़ियों युक्त जंगल से प्राप्त की जाती है, जिसे तेल्ला पॉनिकी नाम से जाना जाता है। यह लकड़ी वजन में हल्की तथा नरम होती है।

कोण्डापल्ली खिलौनों की उत्पत्ति

कोण्डापल्ली खिलौनों की उत्पत्ति के बारे में सटीक जानकारी का अभाव है। किन्तु माना जाता है कि आर्यक्षत्रिय सम्प्रदाय से सम्बन्धित कुछ काष्ठ कलाकार 16वीं शताब्दी में राजस्थान से पलायन कर यहाँ आन्ध्र प्रदेश आये मान्यताओं के अनुसार ऐसा भी माना जाता है कि मुक्तिशी ऋषि जो भगवान शिव द्वारा कला व कौशल में प्रीण किये गये उनके द्वारा यहाँ इस कला–कौशल की उत्पत्ति हुई जिसका उल्लेख ''ब्रह्मण पुराण'' में मिलता है। राजस्थानी कलाकारों का आन्ध्रा आने का अन्य कारण यह है कि 16वीं शताब्दी में अनापेमा रेड्डी ने 10–12 काष्ठ कलाकार परिवारों को अपने दरबार में निमन्त्रित किया था।

निर्माण प्रक्रिया

कोण्डापल्ली खिलौने बनाने हेतु स्थानीय जंगल से तेल्ला पॉनिकी लकड़ी को बड़े–बड़े लट्ठों के रूप में काटकर लाया जाता है। जंगल से लाकर काट–छाट कर साफ किया जाता है तथा धूप में सुखाया जाता है। अब इन बड़े–बड़े लट्ठों को छोटे–छोटे ब्लॉकों (टुकड़ों) में काटा जाता है। फिर इन्हें गर्म करके उपचारित किया जाता है, जिससे लकड़ी का वजन मूल वजन से घटकर एक तिहाई रह जाता है इस प्रकार खिलौना बनाने हेतु पहले ब्लॉक तैयार किये जाते हैं। अब इन तैयार ब्लॉकों पर आकृति को उकेरा जाता है। एक खिलौना अथवा काष्ठ शिल्प बनाने हेतु कई टुकड़ों (ब्लॉकों) को एक साथ जोड़ा जाता है। खिलौनों के अलग–अलग हिस्सों को अलग–अलग टुकड़ों पर तराशने के बाद उन्हें ''तेम्मा जिगरू'' (स्थानीय व स्वमेव तैयार किया गोंद व अधेशिव) के साथ जोड़ा जाता है। अब इन खिलौनों पर मिट्टी का लेपकर सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। सूखने के बाद इन्हें चिकनाकर प्राइमर, जलरंग वनस्पति रंग, तेलरंग व तामचीन पेंट आदि खिलौने के प्रकार के आधार पर लागू कर सजाया जाता है।

विषय वस्तु वर्गीकरण

आन्ध्र प्रदेश की संस्कृति स्थानीय विशेषताओ युक्त ये खिलौने अपने आप में अनौखे व आकर्षक हैं। नक्काशीदार लकड़ी के पैनल व चित्रित आकृतियाँ कोण्डापल्ली और निर्मल में तैयार की जाती है। कोण्डापल्ली खिलौना का विषय संसार अति व्यापक है। यहाँ जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े खिलौने हैं, जिनकी विषयवस्तु का वर्गीकरण इस प्रकार है–

पौराणिक धार्मिक विषयों से सम्बन्धित खिलौने

भारतीय काष्ठा शिल्पकारों ने विविध विषयों को लकड़ी पर संयोजित कर म्यूरल, मूर्ति, खिलौने व अंलकरण आदि को उत्कीर्ण किया संयोजित है। जिनमें पौराणिक धार्मिक हिन्दू देवी–देवता उनका सबसे लोकप्रिय विषय है सीता–राम कल्याणम् (विवाह) को पौराणिक कथाओं में दिव्य उत्सव की महत्वपूर्ण घटना माना जाता है और इसे पैनलों के रूप में शानदार ढ़ग से दर्शाया गया है। राम तथा कृष्ण के जीवन से सम्बन्धित अनेकों दृश्य–राम वन जाते, केवट की नाव में बैठे हुए रावण का वध करते, राम की सेवा मे हनुमान बैठे हुए, इसी प्रकार कृष्ण को माखन खाते, ग्वालों के साथ गाय चराते, राधा के साथ रास–रचाते उत्कीर्ण किया है इनके अतिरिक्त सर्वाधिक दशावतार (नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, वाराह, कुर्म,

मत्स्य, बुद्ध व कल्कि) वेंकटेश्वर, लक्ष्मी–नारायण, शिव–पार्वती, कृष्ण भक्त मीरा, गणेश, कार्तिक, यशोदा, सरस्वती, दुर्गा आदि देवी–देवताओं को उत्कीर्ण किया है।

पशु–पक्षियों के प्रतिरूप खिलौने

हाथी, घोड़ा, गाय, बछड़ा, नंदी, एरावत, ऊँट, बैल, मेढ़ा के अतिरिक्त जंगली जानवर जैसे–शेर, चीता, भालू, हिरण, तेंदुआ, लोमड़ी, आदि को खिलौनों के रूप में परिष्कृत देखा जा सकता है। पक्षियों के प्रतिरूप में चिड़िया, तोता, मोर, कबूतर, हंस, हुदहद, सारस, बगुला, बत्तख, मुर्गा आदि को सुन्दर, सरल रूपों में उत्कीर्ण किया है।

दैनिक क्रिया–कलाप

कोण्डापल्ली खिलौनों में दैनिक क्रिया–कलाप करते या गृहस्थ जीवन के रोजमर्रा के कार्यों को करते स्त्रियों को सौन्दर्यपूर्ण ढ़ग से संयोजित किया है। जैसे ओखल में धान–कूटते, चूल्हे पर खाना/पकवान बनाते, सिलबट्टे पर मसाले पीसते, दही से मक्खन निकालते, फल व सब्जियाँ बेचते

हुए, धान रोपते हुए, कुँआ पर सामूहिक रूप से कपड़े धोते व सुखाते हुए, चरखा चलाते, कृषक पति के साथ खेत में बीज बोते, चारा लाते आदि अनेक परिदृश्यों में उत्कीर्ण कर संयोजित किया है।

परिवहन या यातायात के साधन

मानव विकास में सहायक परिवहन के साधनों से कोण्डापल्ली खिलौने अछूते नहीं रहे। काष्ठ शिल्पकारों ने पहिये के अविष्कार स्वरूप विकसित बैलगाड़ी व घोड़ागाड़ी (रथ/तांगा) से लेकर जलयान व वायुयान तक परिवहनों को अपने कला–कौशल से उकेरा है। अपने ढ़ग से अनोखी व अद्‌भुत ये गाड़ियाँ बहुत ही लुभाती हैं। रंग–बिरंगा ऑटो, ट्रक, लौरी, कार, जीप, स्कूटर, बुलट, नाव, वायुयान, रथ, बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी, हाथी की सवारी (अम्बारी) बेहद मनमोहक लगते हैं।

सजावटी अलंकरण व पैनल

कोण्डापल्ली में खिलौनों के साथ–साथ नक्काशीदार पैनल भी पारम्परिक रूप से बनाये जाते है देवी–देवताओं के अलंकृत पैनल, हाथी, घोड़ा, नंदी आदि के साथ परिपूर्णित लगते हैं। इनके अतिरिक्त छोटे–छोटे सजावटी पैनल, गिफ्ट आइटम भी उत्कीर्ण किये जाते है जिनका उपयोग घर, मंदिर व शोभा यात्राओं को सजाने संवारने में किया जाता है।

संस्कार, अनुष्ठान व तीज–त्यौहार

विवाह संस्कार, सीमान्तोन्नयन संस्कार, रितु क्रिया, नामकरण तथा बलाइकम्पू संस्कारों के समय होने वाले अनुष्ठानों को काष्ठ शिल्पकारों ने सुन्दर व सुव्यवस्थित रूप से संयोजित किया है साथ ही संक्रान्ति अटला तट्टी, ओनम, पोंगल, गुढ़ी पड़वा आदि अनेकों लोक उत्सवों को खिलौनों के साथ संयोजित कर बखूबी परिष्कृत किया है।

व्यवसायिक वर्ग

समाज में निहित विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित प्रतिरूप खिलौने जैसे डॉक्टर, इंजीनियर, सैनिक, अध्यापक, दुकानदार, द्वारपाल, भिखारी, शिकारी, ब्रिटिश अधिकारी आदि को खूब उत्कृष्ठ रूप में संजोया है जिनमें धनी व्यापारी वर्ग के सेठ–सेठानी के हसते मुस्कुराते क्रिया–कलाप विशेष आकर्षक है।

सूर–वीर योद्धाओं तथा वीरांगनाओं की मूर्तियाँ

वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप तथा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई जैसी योद्धा व वीरागनाओं की कुर्बानी और उनके शौर्य, पराक्रम व साहस की कहानी को कोण्डापल्ली कलाकारों ने संजोकर नई पीढ़ी को प्रेरणा स्त्रोत व स्वयं को परितुष्ट किया है।

लोक नृत्य, लोक गायन व आदि–वासी जनजीवन

आन्ध्र प्रदेश के प्रसिद्ध लोक नृत्य 'कुचीपुड़ी', 'वीरनाट्यम' तथा लोक गायन–हरिकथा, वीधी नाटकम, मृंदगम आदि के आदर्श रूप कोण्डापल्ली खिलौनों के रूप में देखे जा सकते हैं इन खिलौनों के माध्यम से काष्ठ शिल्पकारों ने आदिवासी, जन–जीवन, लोक नृत्य, गायन संगीत, सभ्यता, संस्कृति को दर्शाया है।

इस प्रकार कोण्डापल्ली के काष्ठ शिल्पकारों ने छोटी–छोटी मूर्तियाँ व खिलौनों में बड़े–बड़े सामाजिक मूल्यों–नैतिकता, प्रेरणास्त्रोत कर्मनिष्ठ, धर्मी जैसे गुणों को परिष्कृत किया है।

निष्कर्ष

आधुनिक युग में कोण्डापल्ली खिलौने बनाने वाले कुशल कारीगरों व शिल्पकारों की संख्या में कमी आयी है। अतः समाज में परम्परागत रूप से निर्मित गुणवत्तायुक्त इन खिलौनों के प्रति जागरूकता का अभाव है। यद्यपि ग्लोबल टॉय इंडस्ट्री जो कि लगभग 1,00,000 करोड़ रु. से भी अधिक की है। उसमें भारत की भागीदारी अत्यन्त ही कम है। ये खिलौने लोक जीवन दर्शन के साथ आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों को दृढ़ता तथा वैश्विक स्तर पर अपनी हिस्सेदारी में भी भूमिका अदा करने में उपयोगी सिद्ध है। मनोरंजन के साथ–साथ अध्यापन सहायक के रूप में भी कार्य करते हैं।

युवा पीढ़ी खिलौनों की सृजनात्मक व रचनात्मकता के मूल सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त कर वैयक्तिक तथा सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं और कला कल्पना, कौशल में प्रयोगन्वित होकर प्रगति पथ पर अग्रसर हो नई पुनः सृष्टि का परिचय देगी।

सन्दर्भ

1. शुक्ल, रामचन्द्र,– 1964 कला का दर्शन (पृ0 सं0 18) कॉरोना आर्ट पब्लिशर्स मेरठ
2. सिन्हा, अवधेश कुमार– 2018 प्राचीन भारत में खेलकूद (पृ0 सं0 19) मिलिन्द प्रकाशन हैदराबाद भारत
3. मैके, इ.जे.एच– 1948 अर्ली इण्डस सिविलाइजेशन लन्दन (पृ0 सं0 137)
4. न स स्वो दक्षो वरूण ध्रुतिः सुरामन्यु विभीदको अचित्तिः।
अस्ति ज्यायान्र्कनीयस उपारे स्वप्न श्रनेदनृतस्य प्रयोता।। ऋग्वेद 7/86/6
5. जैन, जगदीश चन्द्र– 1965 जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज (पृ0 सं0 359–60) वाराणसी।
6. कासलीवाल, मीनाक्षी 'भारती'– 2013 भारतीय मूर्तिकला एवं स्थापत्य कला (पृ0 सं0 66) राज हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
7. Krishna, Nanditha 2006 Folk Toys of South India (पृ0 सं0 10) The C.P. Rama swami Aiyar Foundation Chennai
8. A.Lakshmi, Swatha 2007 A Report on Kondopally Toys (Research Artical)
9. D.Source.in
10. Jaitly Jaya 2012 Craft Atlas of India, Niyogi Books (पृ0 सं0 383-393)
11. Elaborate wooden panels of Andhra (24 Nov. 2017) handicraft gov.in translate.google
12. (Research Artical) Aggarwal (2009-10) Kondapally Bommalu Lady Shri Ram College
13. www.Inditales.com
14. www.Scoopwoo.com
15. https: www.jagran.com>News
16. https: thebetterindia.com
17. www.deccanherald.com